प्राचीनकाल से लेकर अद्यतन मनीषियों द्वारा दिये गये तैथिक क्रमानुसार संदेश

(श्री परमहंस आश्रम जगतानन्द, ग्रा.+पो. बरैनी, कछवा, जिला-मिर्जापुर (उ.प्र.) में अपने निवास की अवधि में स्वामी श्री अड़गड़ानन्द जी ने प्रवेश-द्वार के पास इस तालिका को गंगा दशहरा (१९९३ ई.) के पावन पर्व पर बोर्ड पर अंकित कराया।)

॥ विश्वगुरु भारत ॥

॥ विश्वगुरु भारत ॥

- सृष्टि का आदि शास्त्र-
  'इमं विवस्वते योगं' (गीता ४/१) भगवान श्रीकृष्ण, ने कहा कि इस अविनाशी योग को मैने आरंभ में सूर्य से कहा । सूर्य ने अपने पुत्र मनु से कहा जिसके अनुसार एक परमात्मा ही सत्य है, परमतत्त्व है; वह कण-कण में व्याप्त है । योग साधना के द्वारा वह परमात्मा दर्शन-स्पर्श और प्रवेश के लिए सुलभ है ।भगवान द्वारा उपदिष्ट वह आदि ज्ञान वैदिक ऋषियों से लेकर अद्यावधि अक्षुण्ण रुप से प्रवाहित है।

- वैदिक ऋषि (अनादिकाल-नारायण सूक्त)
  कण-कण में व्याप्त ब्रह्म ही सत्य है।उसे विदित करने के अतिरिक्त मुक्ति का कोई अन्य उपाय नहीं है।

- भगवान् श्रीराम (त्रेता-लाखों वर्ष पूर्व-रामायण)
  एक परमात्मा के भजन के बिना जो कल्याण चाहता है, वह मूढ़ है।

- योगेश्वर श्रीकृष्ण (५००० वर्ष पूर्व-गीता) परमात्मा ही सत्य है। चिन्तन की पूर्ति में उस सनातन ब्रह्म की प्राप्ति सम्भव है। देवी-देवताओं की पूजा मूढ़बुद्धि की देन है।

- महात्मा मूसा (३००० वर्ष पूर्व-यहूदी धर्म)
  तुमने ईश्वर से श्रद्धा हटायी, मूर्ति बनायी-इससेईश्वरनाराजहै।प्रार्थनामेंलगजाओ।

- महात्मा जरथुस्त्र (२७०० वर्ष पूर्व-पारसीधर्म)
  अहुरमज्दा (ईश्वर) की उपासना द्वारा हृदय में स्थित विकारों को नष्ट करो, जो दुःख केकारणहैं।

- भगवान महावीर (२६०० वर्ष पूर्व-जैनग्रन्थ)
  आत्मा ही सत्यहै। कठोर तपस्यासे इसी जन्म मेंजानाजासकताहै।

- गौतम बुद्ध (२५०० वर्ष पूर्व-महापरिनिब्बान सुत्त)
  मैंने उस अविनाशी पद को प्राप्त किया है जिसेपूर्वमहर्षियों नेप्राप्त कियाथा।यही मोक्ष है।

- मसीहईसा(२०००वर्ष पूर्व-ईसाईधर्म)
  ईश्वरप्रार्थनासेप्राप्तहोताहै।मेरेअर्थात् सद्‌गुरुकेपासआओ,इसलिए किईश्वर केपुत्रकहलाओगे।

- हज़रत मुहम्मद सलल्लाहु०(१४००वर्ष पूर्व-इस्लाम धर्म)
  'ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलल्लाह' -जर्रे-जर्रे में व्याप्त खुदा (ईश्वर) के सिवाय कोई पूजनीय नहीं है। मुहम्मद अल्लाहकेसन्देशवाहकहैं।

- आदि शंकराचार्य(१२००वर्षपूर्व)
  जगत्मिथ्या है। इसमें सत्य हैकेवलहरि और उनका नाम।

- सन्त कबीर(६००वर्षपूर्व)
  'राम नाम अति दुर्लभ, औरन ते नहीं काम। आदि मध्य और अन्तहूँ, रामहिं ते संग्राम।।'
  राम सेसंघर्षकरो,वहीकल्याणकारीहैं।

- गुरुनानक(५००वर्षपूर्व)
  'एकओंकारसतगुरुप्रसादि'।
  एक ओंकार ही सत्य है, किन्तु वह सद्‌गुरुकीकृपाकाप्रसादहै।

- स्वामी दयानन्द सरस्वती (२०० वर्षपूर्व)
  अजर, अमर, अविनाशी एक परमात्मा की उपासना करें। उस ईश्वर का मुख्य नाम ओम्है।

- स्वामी श्री परमानन्द जी (१९११-१९६९ई.)
  भगवान् जब कृपा करते हैं तो शत्रु मित्र हो जाते हैं, विपत्ति सम्पत्ति हो जाती है। भगवान्सर्वत्रसेदेखतेहैं।